आयुष मार्क एक गुणवत्ता प्रतीक आयुष उत्पाद के लिए

(आयुष उत्पादो की गुणवता का आधार आयुष मार्क)

नवीन कुमार गर्ग
एम.फार्मा, पी.एच.डी.(पर)
डिप्लोमा क्लीनिकल रिसर्च
औषधि गुणवत्ता विशेषज्ञ एवं
आयुष मार्क तकनिकी विशेषज्ञ

आजकल आयुष उत्पादो की महत्ता के बारे में स्वास्थ के प्रति लोगो को जागरूकता भारत में ही नहीं बल्कि संसार के कोने-कोने में बढ़ने लगी है। आयुष उत्पादो में आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, नैचुरोपैथिक, यूनानी एवं सिद्धा उत्पाद सम्मिलित है और इस सभी उत्पादों की मूलभूत इकाई औषधिय पादप है।

लोगो के बीच में आयु उत्पादों की विश्वसनियता बढ़ाने के लिए इनकी गुणवत्तता श्रेष्ठ होना अनिवार्य है। गुणवत्ता को (प्रमाणित) करने के लिए आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयुष मार्क प्रमाणिकरण स्कीम शुरू की है। उत्पादो के आयुष मार्क प्रमाणित करने का अधिकार Quality Council of India, विज्ञान एवं तकनिकि मंत्रालय, भारत सरकार को दिया गया है।

काउसिंल द्वारा उत्पादों के गुणवत्ता मानक निर्धारित किये गये हैं। मानको पर खरा उतरने के पश्चात ही उत्पादो को आयुष मार्क दिया जाता है।

आयुष मार्क मिलने के पश्चात भी व्यापक है। एवं भारत सरकार के आयुष अस्पतालों में सप्लाई का क्षेत्र भी व्यापक है। यह WHO GMP की भी आधार शिला है।

आयुष क्षेत्र में मानकीकरण एवं शोध की आवश्यकता

आजकल आयुष क्षेत्र का विस्तार देश में अनेक जीर्ण एवं जटिल बिमारियों के उपचार में प्रबलता/गति से हो रहा है। दूसरी तरफ जनता में आयुष औषधियों एवं चिकित्सा पद्धति में भी जगरूकता आयी है। एवं विश्वास बढ़ने लगा है। क्योंकि ऐलोपैथी दवाओं का शाइड इफेक्ट ही हैं और नहीं। आयुष औषधियाँ रोगों के उपचार में कामयाब होने के साथ शीररिक एवं मानिसक रोग प्रतिरोधक बढ़ाने में सक्षम हो रही है।

आयुष औषधियों की सक्षमता को बढाने के लिए मानकीकरण एवं शोध की बहुत आवश्यकता है जिससे मिलावट एवं निम्न गुणवत्ता की औषधियों से बचाया जा सकें। भारत सरकार भी इस कार्य को सफल बनाने के लिए कई स्कीम भी निकाली गई है जिसमें करोड़ो रूपयें की भी फंडिग/अनुदान दे रही है।

मानकीकरण का निर्धारण आयुर्वेदिक फार्माकॉपिया ऑफ इण्डिया में भी दिया है। तथा भारत सरकार ने कई संस्थानों को जिम्मा भी दिया हैं। जिससे प्रत्येक औषधि का मानक निर्धारित हो सकें।

आयुष मंत्रालय द्वारा आयुष मार्क प्रमाणिकरण स्कीम Quality Council of India, विज्ञान एवं तकनिकी मंत्रालय, भारत सरकार के साथ आयुष उत्पादो के लिए शुरू की हैं।

शोध कार्य को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने Extra Mural Research के तहत करोड़ों रूपयों का अनुदान भी किया जा रहा हैं जिससे जटिल से जटिल बिमारी का ईलाज आयुष पद्धति से हो सके।

उपयोगी घरेलु नुस्खे

1. परिजात के फूल अपने चिकित्सकीय गुणों के लिए भी जाने जाते है। कहते है कि इन फूलों के ताजे रस को शहद में मिलाकर सेवन करने से बुखार उतर जाता है।
2. रूसी से परेशान है?तो नुस्खा आजमाएँ दही में साबुत मूंग की दाल का पाउडर मिलाकर सप्ताह में दो बार बाल धोएँ।
3. जलने की वजह से फफोला पड़ जाने पान के पत्ते का रस प्रभावशाली उपचार है। पान के पत्ते का रस संक्रमण को रोकता है तथा घाव को तुरंत ठीक करता है।
4. ऑयल पेंटिग पर जमी धूल को हटाने के उस ब्रेड का टुकड़ा हल्के हाथ से रगड़े। इससे ना सिर्फ धूल हटेगी बल्कि पेंटिग मे नई चमक भी आ जायेगी।
5. यदि कच्चा अंडा फर्श पर गिर कर टूट जाए तो उसे कपड़े से साफ करने की कोशिश करके गंदगी को और ना बढ़ाएं। बल्कि उस स्थान पर नमक डाल दें सूख जाने पर यह आराम से साफ हो जाएगा।
6. आटा छाने की छन्नी से को प्लास्टिक की थैली में रखे, इससे इस पर धूल जमा नहीं होगी। वरना् छन्नी पर जमा धूल आटे में मिल जायेगी।
7. यदि प्याज काटते समय आंसू आते है तो उसे काटने से पहले या तो फ्रिज में रख दें अथवा ठंडे पानी से धो लें।
8. लकड़ी से किए गए चमकदार पेंट को यदि मृदु साबुन एवं दूध के मिश्रण से साफ किया जाए तो वह लम्बे समय तक कायम रहता है।

हिचकी

चार छोटी इलायची छिलके सहित लेकर कूट लें और उसे 500 ग्राम पानी में डालकर उबालें। जब 200 ग्राम पानी रह जाए तो उतार लें और फिर किसी कपड़े से छानकर रोगी को गुनगुना पिला दें। इसे एक बार देने से ही हिचकी शीघ्र बंद हो जाएगी।